بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
बयान फ़र्मूदा 22 मई, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(शहादत महीने की तिथि 22 ,1405 हश)

आजज़ी और इन्केसारी (विनयशीलता एवं विम्रता) की रौशनी में आँहज़रत ﷺ के अख़लाक़े फ़ाज़िला का दिल नशीन तज़किरा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 22.05.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم۔بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۔ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّينَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया: आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के पहलू विनम्रता और विनयशीलता का ज़िक्र हो रहा था। आज भी वही ज़िक्र है। आप सल्ल. छोटी-छोटी बातों की मिसालें देकर इसका इज़हार फ़रमाया करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं उसी तरह खाता हूँ जैसे ग़ुलाम खाता है और उसी तरह बैठता हूँ जैसे ग़ुलाम बैठता है क्योंकि मैं भी तो एक बंदा ही हूँ। यानी सरदारों और रईसों वाला तकब्बुर (घमंड) और ख़ुदबीनी-नुमाइश मेरे अंदर नहीं है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँटनी, जिसका नाम "अज़्बा" था, वो ऐसी तेज़ थी कि उससे आगे कोई ऊँट नहीं निकल सकता था। एक बद्दू अपने एक जवान ऊँट पर सवार आया और मुक़ाबले में वो ऊँट अज़्बा से आगे निकल गया तो मुसलमानों को बड़ा बुरा लगा कि अज़्बा पीछे रह गई और तुम आगे निकल गए। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके इस रवैये पर फ़रमाया: अल्लाह का हक़ है कि जिस चीज़ को दुनिया में ऊपर उठाता है उसे नीचा भी दिखाता है।

फिर इन्केसारी की एक और मिसाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं: मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उम्रे की इजाज़त चाही। आप सल्ल. ने इजाज़त मरहमत फ़रमाई और फ़रमाया: ऐ मेरे भाई! अपनी दुआ में मुझे न भूलना। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं

कि आप सल्ल. ने यह एक ऐसी बात फ़रमाई थी कि इसके बदले मुझे पूरी दुनिया भी मिल जाती तो भी मुझे ख़ुशी न होती। आप सल्ल. पर दरूद भेजने को अल्लाह तआला ने क़बूलियत-ए-दुआ के लिए ज़रूरी क़रार दिया है लेकिन इन्केसारी की इंतिहा है कि आप सल्ल. अपने एक मुरीद को फ़रमा रहे हैं कि मेरे लिए दुआ करना।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी काम के करने में कभी आर (अपमान) नहीं समझते थे और छोटे से छोटा काम भी आप सल्ल. ख़ुद करके दूसरों को दिखाते बल्कि सिखाते थे। चुनाँचे एक रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र एक लड़के के पास से हुआ। वो एक बकरी की खाल उतार रहा था। तो आप सल्ल. ने उसे परे किया और फ़रमाया: पीछे हटो ताकि मैं तुम्हें सही तरीक़ा दिखाऊँ, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि तुम खाल उतारने में महारत रखते हो। चुनाँचे आप सल्ल. ने अपना हाथ खाल और गोश्त के दरमियान दाख़िल किया और उसे अंदर तक ले गए यहाँ तक कि वह बग़ल तक छुप गया। फिर आप सल्ल. ने फ़रमाया: यूँ करो ऐ लड़के! इस तरह खाल उतारो। आप सल्ल. ने उसका सारा काम भी किया और सिखाया भी।

हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी से रिवायत है कि वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बकरी दूध दुहने के लिए लेकर आई। तो आप सल्ल. ने उसे बाँधा और उसका दूध दुहा। आप सल्ल. ने फ़रमाया: मेरे पास बड़ा बर्तन लेकर आओ। सो मैं एक बड़ा बर्तन लाई तो आप सल्ल. ने उसमें दूध दुहा यहाँ तक कि वो भर गया। फिर आप सल्ल. ने फ़रमाया: ख़ुद भी पियो और अपने पड़ोसियों को भी पिलाओ।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया: जब कोई शख़्स नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आता तो आप सल्ल. उससे मुसाफ़हा फ़रमाते। आप सल्ल. अपना हाथ उसके हाथ से न खींचते, यहाँ तक कि वो शख़्स ख़ुद अपना हाथ खींच लेता। और आप सल्ल. अपना चेहरा-ए-मुबारक उसके चेहरे से न मोड़ते, यहाँ तक कि वो शख़्स ख़ुद मुँह मोड़ लेता। और आप सल्ल. को कभी नहीं देखा गया कि अपने हम-नशीन के सामने घुटने बढ़ाए हुए हों।

बादिया-नशीनों में ज़ाहिर (रज़ी) नामक सहाबी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए देहात की सौग़ातें लाया करते थे और जब वो जाने लगते तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उन्हें काफ़ी माल व मताअ देकर रवाना फ़रमाते। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि ज़ाहिर हमारे बादिया-नशीन यानी गाँव में रहने वाले दोस्त हैं और हम उनके शहरी दोस्त हैं।

एक दिन ऐसा हुआ कि ज़ाहिर बाज़ार में अपना कुछ सामान फ़रोख़्त कर रहे थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ़ लाए और पीछे से उन्हें अपने सीने से लगा लिया। हज़रत ज़ाहिर रज़ि. आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख नहीं पा रहे थे। उन्होंने पूछा: कौन है? मुझे छोड़ दो। लेकिन जब उन्होंने मुड़कर देखा तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहचान लिया तो अपनी कमर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सीना-ए-मुबारक से मिलाने लगे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहना शुरू कर दिया: कौन इस गुलाम को ख़रीदेगा? हज़रत ज़ाहिर ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! तब तो आप सल्ल. मुझे घाटे का सौदा पाएँगे। मुझे किसने ख़रीदना है? इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह के नज़दीक तुम घाटे का सौदा नहीं हो या फ़रमाया कि अल्लाह के हुज़ूर तुम बहुत क़ीमती हो।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: मैंने अपने वालिद से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में दाख़िल होने के बारे में पूछा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: जब

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर तशरीफ़ लाते तो घर के औक़ात को तीन हिस्सों में तक़सीम फ़रमाते। एक हिस्सा अल्लाह जल्ल शानुह के लिए वक़्फ़ फ़रमाते। एक हिस्सा अपने अहल के लिए। और एक हिस्सा ख़ुद अपने लिए। फिर अपने हिस्से को भी अपने और लोगों के दरमियान बाँट लेते और इसमें ख़ास सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़रिए आम लोगों तक दीन की बातें पहुँचाते और उनसे कोई बात बचा न रखते।

हुज़ूर ने फ़रमाया: आप सल्ल. पर जो पहली वही हुई उससे भी आप सल्ल. की इन्केसारी और फ़रोतनी का इज़हार होता है। हज़रत मुसलह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: सबसे पहली वही ग़ार-ए-हिरा में नाज़िल हुई जिसमें जिब्राइल रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नज़र आए और कहा اِقْرَاْ यानी पढ़। रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं पढ़ना नहीं जानता। इसका मतलब है कि यह बोझ मुझ पर न डाला जाए — क्योंकि उस वक़्त आप सल्ल. के सामने कोई किताब तो नहीं रखी थी जिसे आप सल्ल. ने पढ़नी थी, बल्कि जो कुछ जिब्राइल बताता वो आप सल्ल. को ज़बानी कहना था और यह आप सल्ल. कह सकते थे, मगर आप सल्ल. ने इन्केसार का इज़हार किया। लेकिन चूँकि अल्लाह तआला ने इस काम के लिए आप सल्ल. को चुना था, इसलिए बार-बार कहा कि पढ़ो। आख़िर तीसरी बार कहने पर आप सल्ल. ने पढ़ा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है: मैं एक मरतबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप सल्ल. अपने बाला-ख़ाने में तशरीफ़ फ़रमा थे और उस वक़्त आप सल्ल. एक चटाई पर थे। आप सल्ल. के और उस बोरिए के दरमियान कोई चीज़ न थी। आप सल्ल. के सर के नीचे चमड़े का एक तकिया था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। और आप सल्ल. के पाँव के पास कीकर के पत्तों का ढेर लगा था। मैंने आप सल्ल. के पहलू में चटाई का निशान भी देखा। यह देखकर मैं रो पड़ा। आप सल्ल. ने पूछा: तुम्हें क्या बात रुला रही है? मैंने कहा: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! किसरा व क़ैसर आसाइश में हैं। आप सल्ल. तो अल्लाह के रसूल हैं और इस हाल में। आप सल्ल. ने फ़रमाया: क्या तुम इससे ख़ुश नहीं हो कि उनके लिए दुनिया हो और हमारे लिए आख़िरत हो।

बद-अख़लाक़ (अशिष्ट, अनैतिक) लोगों से भी आप सल्ल. हमेशा नरमी और इन्केसारी का सुलूक फ़रमाते। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर अपना हक़ तलब किया और सख़्त लहजा इख़्तियार किया। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ग़ुस्से हुए, मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इसे छोड़ दो और एक ऊँट ख़रीदकर इसे दे दो। सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने कहा: हमें उसके क़र्ज़ के बराबर ऊँट नहीं मिल रहा, बल्कि उससे ज़्यादा क़ीमती ऊँट मिल रहे हैं। आप सल्ल. ने फ़रमाया: वही उसे दे दो — क्योंकि तुममें सबसे अच्छा वो है जो क़र्ज़ की अदायगी में सबसे बेहतर है।

फ़त्ह-ए-मक्का के वक़्त हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद को लेकर रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें देखा तो फ़रमाया: ऐ अबूबकर! तुम इस बूढ़े आदमी को घर रहने देते, मैं ख़ुद इनके पास आ जाता। इस पर हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह इस बात के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं कि आप सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बिठाया। आप सल्ल. ने उनके सीने पर हाथ फेरा और फ़रमाया: इस्लाम ले आइए, आप सलामती में आ जाएँगे। चुनाँचे अबू-क़हाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

आप सल्ल. के घर के बारे में हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरवाज़े सबके लिए खुले थे। आप सल्ल. के लिए न कोई दरबान खड़ा होता था, न आप सल्ल. के लिए सुबह-शाम बड़े-बड़े बर्तनों में खाने पेश किए जाते थे यानी आला क़िस्म के खाने पेश न होते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जो भी मुलाक़ात करना चाहता वो आसानी से आप सल्ल. से मिल सकता था। आप सल्ल. ज़मीन पर बैठते, सादा और मोटे कपड़े पहनते, गधे पर सवार होते, लोगों को अपनी सवारी के पीछे बिठाते और खाने के बाद अपनी उँगलियाँ चाट लिया करते थे यानी साफ़ कर लेते थे।

उँगलियाँ चाटने के बारे में हज़रत ज़ैनुल-आबिदीन वलीउल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु का एक नोट है जिसमें हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से लिखा है कि अत्बिबा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि इंसान के हाथ की उँगलियों में ख़ास लम्स की ताक़त है इसलिए अगर खाने के बाद उँगलियाँ चाट ली जाएँ तो हाज़मे में मुफ़ीद होता है।

मस्जिद की सफ़ाई करने के बारे में हज़रत याकूब बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में आने वाली गर्द व ग़ुबार को एक छड़ी के साथ साफ़ कर लिया करते थे यानी छड़ी के आगे कोई कपड़ा वग़ैरह लगाकर उससे झाड़-पोंछ करते थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला बहुत रहीम व करीम है। वो हर तरह इंसान की परवरिश फ़रमाता और उस पर रहम करता है और इसी रहम की वजह से वो अपने मामूरों और मुरसलों को भेजता है ताकि वो अहल-ए-दुनिया को गुनाह-आलूद ज़िंदगी से नजात दें। मगर तकब्बुर बहुत ख़तरनाक बीमारी है। जिस इंसान में यह पैदा हो जाए, उसके लिए रूहानी मौत है। मैं यक़ीनन जानता हूँ कि यह बीमारी क़त्ल से भी बढ़कर है। मुतकब्बिर शैतान का भाई हो जाता है इसलिए कि तकब्बुर ही ने शैतान को ज़लील व ख़्वार (बदनाम) किया। इसलिए मोमिन की यह शर्त है कि उसमें तकब्बुर न हो, बल्कि इन्केसार, इन्केसारी और फ़रोतनी उसमें पाई जाए। और यह ख़ुदा के मामूरों का ख़ासा (विशेषता) होता है उनमें हद दर्जे की फ़रोतनी और इन्केसार होता है। और सबसे बढ़कर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में यह वस्फ़ था।

आप सल्ल. के एक ख़ादिम से पूछा गया: तेरे साथ आप सल्ल. का क्या मुआमला है? उसने कहा: सच तो यह है कि मुझसे ज़्यादा वो मेरी ख़िदमत करते हैं।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ۔

अल्लाह तआला हमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात और आप सल्ल. की सुन्नत पर चलते हुए इन्केसारी इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आख़िर पर हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बनसरिहिल अज़ीज़, ने मुकर्रम मालिक दाऊद महमूद साहब इब्न मुहम्मद इस्हाक़ साहब मरहूम का ज़िक्र-ए-ख़ैर (सद्वर्णन) फ़रमाते हुए नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ाइब पढ़ाने का एलान फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَن یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131